रूसी लोक कथा
THE
FROG-TSAREVNA
मेंढकी-त्सरेवना
चित्र: पी. पोनोमारेंको
हिंदी: अरविन्द गुप्ता
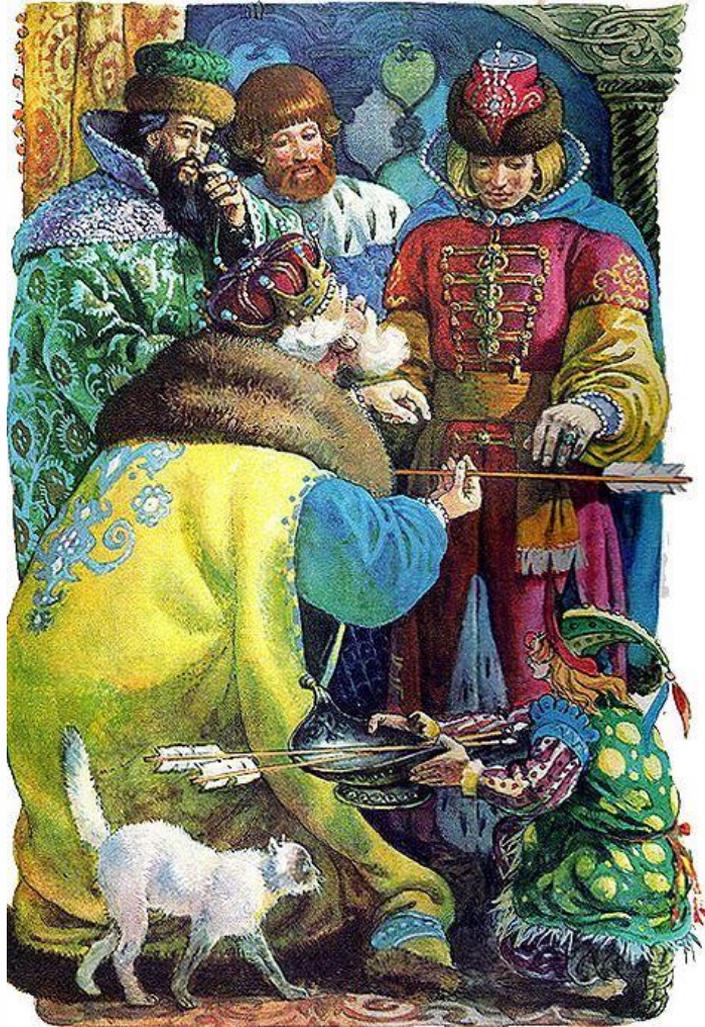
बहुत समय पहले एक राजा था जिसके तीन बेटे थे. एक दिन, जब उसके बेटे वयस्क हो गए, तो ज़ार ने उन्हें अपने पास बुलाया और कहा: "मेरे प्यारे बेटों, वैसे मैं अभी बूढ़ा नहीं हुआ हूँ, फिर भी मैं तुम तीनों की शादी देखना चाहता हूँ और तुम्हारे बच्चों और अपने पोते-पोतियों को देखकर खुश होना चाहता हूँ."

उसके बेटों ने उत्तर दिया:

"यदि आपकी यही इच्छा है. पिताजी, तो हमें अपना आशीर्वाद दीजिए. आप हमारी शादी किससे करवाना चाहेंगे?"

"ठीक है मेरे बेटों, तुममें से प्रत्येक को एक तीर लेकर खुले मैदान में जाना. फिर तुम लोग तीर चलाना, और जहां भी वे तीर गिरेंगे, वहां तुम्हें अपनी दुल्हनें मिलेंगी."

बेटों ने अपने पिता को प्रणाम किया और उनमें से प्रत्येक एक-एक तीर लेकर खुले मैदान में गया. वहाँ उन्होंने अपने धनुष खींचे और अपने बाण चलाये.

सबसे बड़े बेटे का तीर एक शाही परिवार के आँगन में जाकर गिरा और शाही परिवार की बेटी ने उसे उठाया. मंझले बेटे का तीर एक अमीर व्यापारी के आँगन में गिरा और व्यापारी की बेटी ने उसे उठाया. और जहाँ तक सबसे छोटे बेटे, त्सारेविच इवान की बात है, उसका तीर चला और फिर वो न जाने कहाँ उड़ गया. वो तीर की तलाश में निकला और वह आगे-आगे बढ़ता गया जब तक कि वह एक दलदल तक नहीं पहुंचा. उसने वहां क्या देखा - एक मेंढकी अपने मुंह में तीर लिए बैठी थी. त्सारेविच इवान ने मेंढकी से कहा:

"मेंढकी, मेंढकी, मुझे मेरा तीर वापस दे दो."

लेकिन मेंढकी ने उत्तर दिया:

"अगर तुम मुझसे शादी करोगी तभी मैं तीर वापिस करूंगी!"

"तुम्हारा क्या मतलब है? भला मैं एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता हूँ!"

"तुम्हें मुझ से शादी अवश्य करना चाहिए, क्योंकि मैं तुम्हारी निर्धारित दुल्हन हूं."

त्सारेविच इवान को दुःख और निराशा महसूस हुई. लेकिन करने को कुछ नहीं था इसलिए वो मेंढकी को उठाकर घर ले आया.
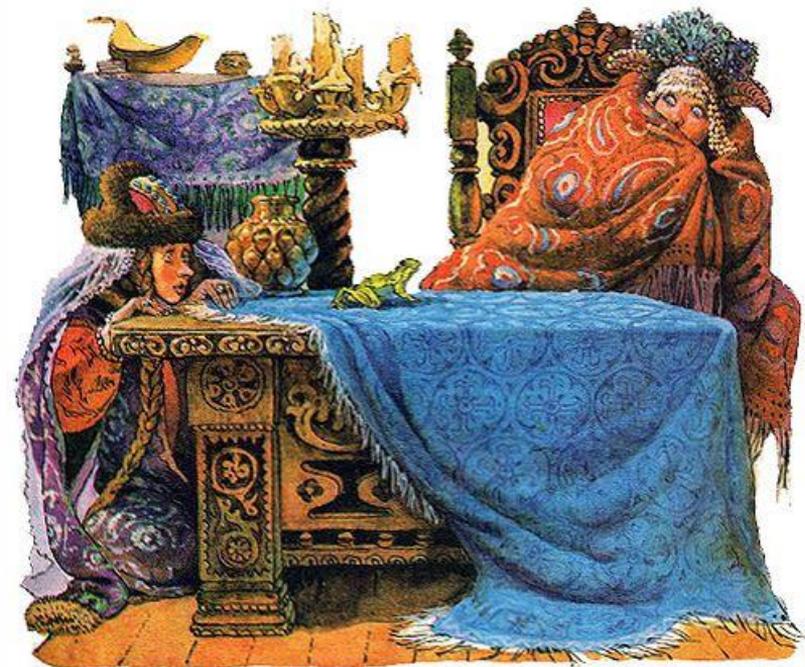
तीन शादियाँ मनाई गईं: ज़ार के सबसे बड़े बेटे ने शाही परिवार की बेटी से शादी की, उनके बीच वाले बेटे ने व्यापारी की बेटी से, और गरीब त्सारेविच इवान ने मेंढकी से शादी की.

कुछ समय बीतने के बाद ज़ार ने अपने बेटों को अपने पास बुलाया.

"मैं देखना चाहता हूं कि तुम्हारी पत्नियों में से कौन सबसे बेहतर सिलाई करती है." उन्होंने कहा, "उन्हें कल सुबह तक मेरे लिए एक शर्ट बनाने को कहो."

पुत्रों ने अपने पिता को प्रणाम किया और वे चले गए.

त्सारेविच इवान घर आया, बैठ गया और उसने अपना सिर लटका लिया. फिर मेंढकी फर्श पर उछलकर उसके पास आई और उसने पूछा:

"तुम्हारा मुंह क्यों लटका है, त्सारेविच इवान? वो क्या बात है जो तुम्हें इतना परेशान कर रही है?"

"पिताजी ने कहा कि कल सुबह तक तुम उनके लिए एक शर्ट बनानी है."

मेंढकी ने कहा:

"फ़िक्र मत करो, त्सारेविच इवान, बिस्तर पर जाओ और लेटो, क्योंकि सुबह का वक्त शाम से ज्यादा कीमती होता है."

त्सारेविच इवान बिस्तर पर चला गया. फिर मेंढकी बरामदे में कूदी, उसने अपनी मेंढक की खाल उतार दी और वासिलिसा - सुन्दर और समझदार युवती में बदल गई, जिसकी सुंदरता तुलना से परे थी.
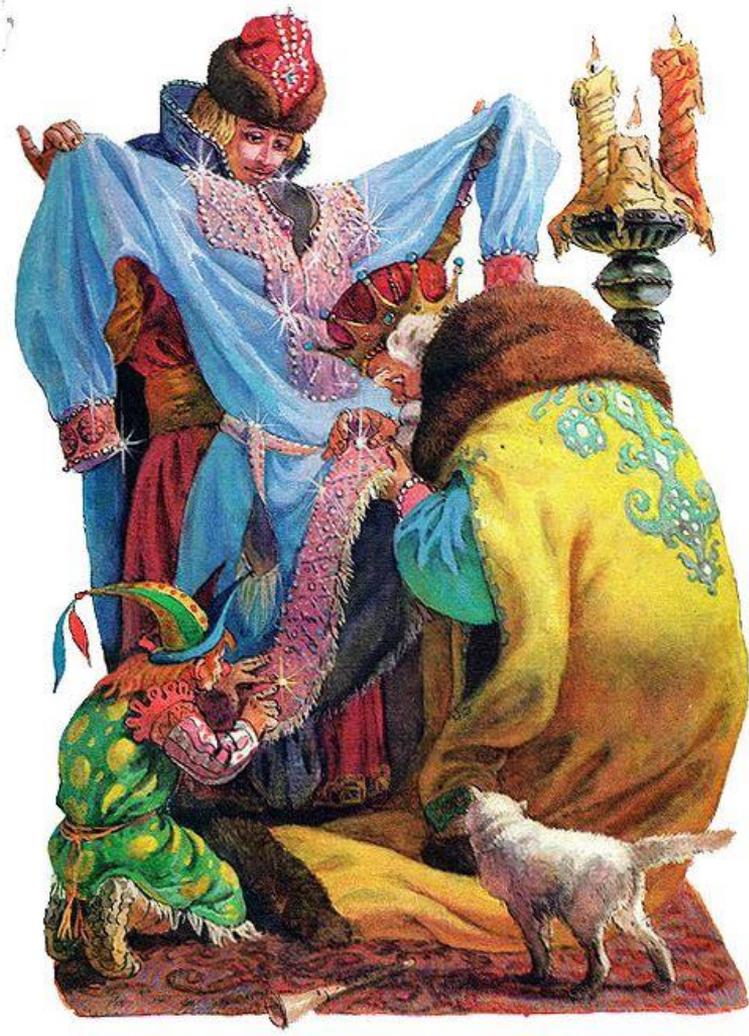
उसने ताली बजाई और चिल्लाई:

"आओ, मेरी लड़कियों और दासियों, जल्दी करो और काम पर लग जाओ! कल सुबह तक मेरे लिए एक कमीज बनाओ, बिल्कुल वैसी, जैसी मेरे अपने पिता पहनते थे."

सुबह जब त्सारेविच इवान जागा, तब मेंढकी फिर से फर्श पर उछल-कूद कर रही थी, लेकिन शर्ट पूरी तरह से तैयार थी और एक सुंदर तौलिये में लिपटी हुई मेज पर रखी थी. त्सारेविच इवान बहुत खुश हुआ. वह शर्ट को लेकर अपने पिता के पास गया. तब ज़ार अपने दो बड़े बेटों के उपहार लेने में व्यस्त थे. सबसे बड़े बेटे ने अपनी कमीज निकाल कर दी. ज़ार ने उसे लिया और कहा:

"यह शर्ट केवल एक गरीब किसान के पहनने के लिए ही ठीक है."

बीच वाले बेटे ने अपनी कमीज़ निकाली, और ज़ार ने कहा:

"यह शर्ट केवल नहाने के लिए ही काम की है."

तब त्सारेविच इवान ने अपनी शर्ट निकाली, जिस पर सोने और चांदी की खूबसूरती से कढ़ाई थी, और ज़ार ने उस पर एक नज़र डाली और कहा:

"अब यह वो शर्ट है जो छुट्टियों में पहनने के लिए काम आएगी!"

दोनों बड़े भाई घर गए और उन्होंने आपस में बातचीत की और कहा:

"ऐसा लगता है कि हमने त्सारेविच इवान की पत्नी पर हंसकर गलती की है. वह कोई मेंढकी नहीं, बल्कि एक चुड़ैल है."

अब ज़ार ने फिर से अपने बेटों को बुलाया.

"अपनी पत्नियों को कल सुबह तक मेरे लिए कुछ रोटी बनाने को कहो." उन्होंने कहा, "मैं जानना चाहता हूं कि उनमें से सबसे अच्छा रसोइया कौन है."

त्सारेविच इवान का मुंह लटक गया और वो घर चला गया. फिर मेंढकी ने उससे पूछा:

"तुम इतने उदास क्यों हो, त्सारेविच इवान?"

त्सारेविच इवान ने कहा:

"तुम्हें कल सुबह तक मेरे पिता के लिए कुछ रोटी बनानी है."

"फ़िक्र मत करो, त्सारेविच इवान, जाओ बिस्तर पर जाकर लेटो. सुबह का वक्त शाम से ज्यादा कीमती होता है."

दोनों भाभियाँ, जो पहले मेंढकी पर हँसी थीं, ने अब रसोई में काम करने वाली एक बूढ़ी औरत को यह देखने के लिए भेजा कि मेंढकी अपनी रोटी कैसे पका रही थी.

लेकिन मेंढकी चतुर थी और उसने अनुमान लगा लिया कि उसकी भाभियाँ क्या कर रही थीं. उसने कुछ आटा गूंथा, फिर चूल्हे का ऊपरी हिस्सा तोड़ दिया और आटे को छेद में नीचे फेंक दिया. बुढ़िया दौड़कर दोनों भाभियों के पास गई और उन्हें सारी बात बताई और उन्होंने भी बिल्कुल वैसा ही किया जैसा मेंढकी ने किया था.

फिर मेंढकी बरामदे में कूदी, और बुद्धिमान और चतुर वासिलिसा में बदल गई. फिर उसने अपने हाथों से ताली बजाई.
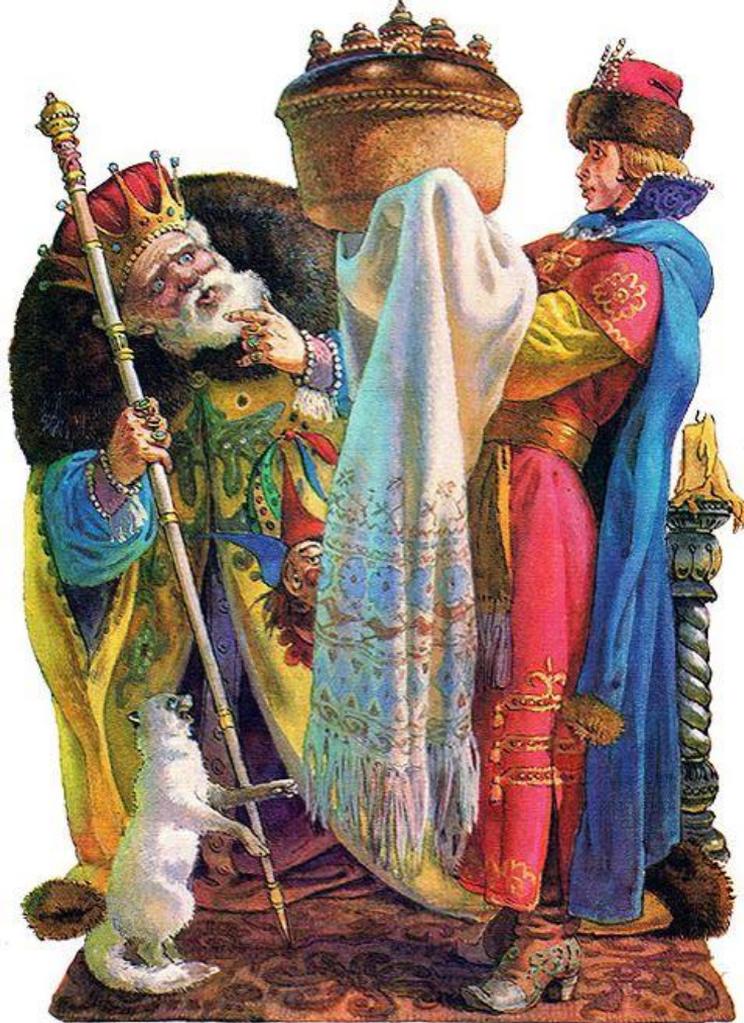
"आओ, मेरी लड़कियों और दासियों, जल्दी करो और काम पर लग जाओ!" उसने कहा, "कल सुबह तक मेरे लिए कुछ मुलायम सफेद रोटी बना कर लाओ, जैसी मैं अपने पिता के घर पर खाती थी."

सुबह त्सारेविच इवान उठा, और रोटियां पूरी तरह से तैयार थी. वे मेज पर रखी थीं और सुंदर ढंग से सजी हुई थी: रोटियों के किनारों पर दीवारों और द्वारों के साथ शहर की आकृतियाँ अंकित थीं.

त्सारेविच इवान बहुत खुश हुआ. उसने रोटियों को तौलिए में लपेटा और अपने पिता के पास ले गया जो तभी अपने बड़े बेटों द्वारा लाई गई रोटियाँ ले रहे थे. उनकी पत्नियों ने आटे को चूल्हे में डाल दिया था जैसा कि बुढ़िया ने उनसे कहा था, और रोटियाँ जली हुई और कठोर थीं.

ज़ार ने अपने बड़े बेटे से रोटी ली, उसने उसे देखा और उन्होंने उन रोटियों को नौकरों के लिए भेज दिया.

ज़ार ने अपने मंझले बेटे से भी रोटियां लीं और उनके साथ भी वैसा ही किया. लेकिन जब त्सारेविच इवान ने उसे अपनी रोटी सौंपी, तो ज़ार ने कहा:

"देखो, वो रोटी केवल छुट्टियों में ही खाने लायक हैं!"

फिर ज़ार ने अपने तीनों बेटों को आदेश दिया कि कल वे अपनी पत्नियों के साथ आएं और उसके साथ दावत करें.

एक बार फिर त्सारेविच इवान बेहद दुखी होकर घर पहुंचा. उसका सिर बहुत नीचे झुका हुआ था. तुरंत मेंढकी फर्श पर उछलकर उसके पास आई और बोली:

"टर्र, टर्र तुम इतने दुखी क्यों हो, त्सारेविच इवान? क्या तुम्हारे पिता कुछ निर्दयी शब्द कहकर तुम्हें दुखी किया है?"

"ओह, मेंढकी, मेंढकी!" त्सारेविच इवान चिल्लाया. "मैं दुखी होने से कैसे बच सकता हूँ? ज़ार ने मुझे तुम्हें अपनी दावत में लाने का आदेश दिया है. अब बताओ कि मैं तुम्हें लोगों को कैसे दिखा सकता हूँ!"

मेंढकी ने उत्तर में कहा:

"फ़िक्र मत करो, त्सारेविच इवान, लेकिन तुम अकेले दावत में जाना, मैं बाद में आऊंगी. जब तुम्हें तेज़ रौंदने की आवाज और गड़गड़ाहट सुनाई दे, तो डरना मत, लेकिन अगर वे तुमसे पूछें कि वो क्या है, तो कहना:

"वह मेरी मेंढकी है जो अपने डिब्बे में सवार है."

इसलिए त्सारेविच इवान अकेले ही दावत में गया, और उसके बड़े भाई अपनी-अपनी पत्नियों के साथ आए. वे सभी अपने बेहतरीन कपड़े पहने हुए थीं. उनकी भौंहें काली थीं और उनके गाल, गुलाब जैसे लाल थे. वे वहां खड़े रहे और उन्होंने त्सारेविच इवान का मज़ाक उड़ाया.

"तुम अपनी पत्नी के बिना क्यों आये हो?" उन्होंने पूछा. "तुम उसे रुमाल में ला सकते थे. तुम्हें इतनी सुंदर पत्नी कहाँ से मिली? तुमने उसे सभी दलदलों में खोजा होगा."

फिर ज़ार अपने बेटों, बहुओं और सभी मेहमानों के साथ कढ़ाई वाले कपड़ों से ढकी हुई ओक की मेजों पर दावत करने के लिए बैठ गया. अचानक बड़ी जोरदार आवाज़ और गड़गड़ाहट हुई और सारा महल काँप उठा. मेहमान डर गए और अपनी सीटों से उछल पड़े. लेकिन त्सारेविच इवान ने कहा:

"डरो मत, ईमानदार लोगों, वह केवल मेरी मेंढकी ही है जो अपने डिब्बे में सवार है."

और फिर छह सफेद घोड़ों द्वारा खींची गई एक सोने के रंग की गाड़ी ज़ार के महल के बरामदे की ओर तेजी से बढ़ी, और वासिलिसा - सुन्दर और बुद्धिमान उसमें से बाहर निकली. आसमानी नीले रेशम का उसका गाउन सितारों से जड़ा हुआ था, और उसके सिर पर उसने चमकदार अर्धचंद्र पहन रखा था, और वह इतनी सुंदर थी कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता था लेकिन उसे देखना एक वास्तविक आश्चर्य और आनंद था! उसने त्सारेविच इवान का हाथ पकड़ा और उसे कढ़ाईदार कपड़ों से ढकी हुई ओक की मेजों के पास ले गई.

मेहमान खाने-पीने और मौज-मस्ती करने लगे. वासिलिसा - सुन्दर और बुद्धिमान ने उसके गिलास से शराब पी और बची हुई शराब अपनी बायीं आस्तीन में डाल दी. उसने हंस का कुछ मांस खाया और हड्डियों को अपनी दाहिनी आस्तीन में डाल दिया. और जब बड़े बेटों की पत्नियों ने देखा कि वासिलिसा क्या कर रही है, तो उन्होंने भी वैसा ही किया.

उन्होंने खाया-पिया और फिर नाचने का समय आया. वासिलिसा - सुन्दर और बुद्धिमान ने त्सारेविच इवान का हाथ पकड़ा और नृत्य करना शुरू कर दिया. वह नाचती रही, घूमती रही, गोल-गोल घूमती रही, और सभी लोग देखते रहे और आश्चर्यचकित होते रहे. उसने अपनी बाईं आस्तीन लहराई, और फिर सबको एक नीली झील दिखाई दी; उसने अपनी दाहिनी आस्तीन लहराई, और फिर सफेद हंस झील पर तैरने लगे. ज़ार और उसके मेहमान आश्चर्य से भर गए.
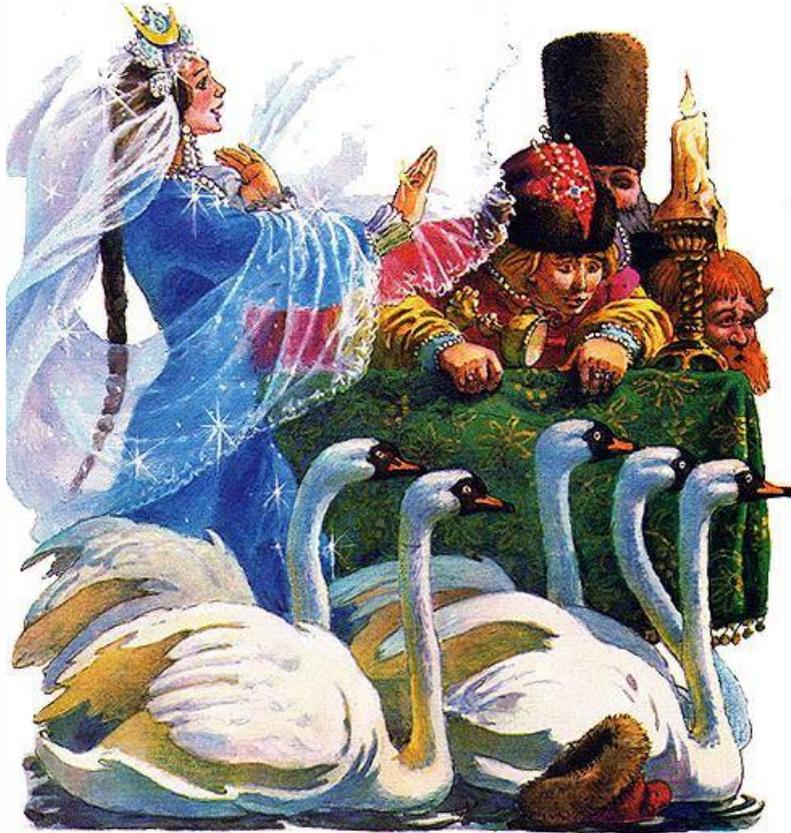
फिर दोनों बड़े बेटों की पत्नियाँ नाचने लगीं. उन्होंने अपनी बायीं आस्तीनें लहराईं और मेहमानों पर केवल शराब ही छिडकी ; उन्होंने अपनी दाहिनी आस्तीन लहराई, और फिर हड्डियाँ चारों ओर उड़ने लगीं, और एक हड्डी ज़ार की आँख में लगी. उससे ज़ार को बहुत गुस्सा आया और उसने अपनी दोनों बहुओं को उसकी नज़रों से दूर चले जाने को कहा.

इस बीच, त्सारेविच इवान दावत से बाहर निकल गया. वो भाग कर घर गया और उसने मेंढकी की खाल ढूंढकर उसे स्टोव में डालकर जला दिया.

जब वासिलिसा बुद्धिमान और चतुर घर लौटी, तो उसने तुरंत देखा कि उसकी मेंढकी की त्वचा गायब हो गई थी. वह बहुत दुखी होकर एक बेंच पर बैठ गई, और उसने त्सरेविच इवान से कहा:

"अरे त्सारेविच इवान, तुमने क्या किया! अगर तुमने केवल तीन दिन और इंतजार किया होता, तो मैं हमेशा के लिए तुम्हारा हो जाती. लेकिन अब अलविदा. थ्राइस-नाइन लैंड्स से परे थ्राइस-टेन ज़ारडोम में मुझे ढूंढो जहां मृत्युहीन कोशी रहता है."

फिर वासिलिसा बुद्धिमान और चतुर एक भूरे कोयल-पक्षी में बदल गई और खिड़की से बाहर उड़ गई. त्सारेविच इवान बहुत देर तक रोता रहा और फिर उसने सभी दिशाओं को प्रणाम किया और वहां से चला दिया. उसे नहीं पता था कि वह अपनी पत्नी, बुद्धिमान और चतुर वासिलिसा को कहाँ ढूँढ़े. वह दूर चला या पास, बहुत समय के लिए चला, या थोड़े समय के लिए, कोई नहीं जानता, लेकिन उसके जूते घिस गए, उसका काफ़्तान घिस गया और फट गया, और उसकी टोपी बारिश से खराब हो गई. थोड़ी देर बाद उसकी मुलाकात एक छोटे बूढ़े आदमी से हुई जो उतना ही बूढ़ा था जितना बूढ़ा कोई आदमी हो सकता था.
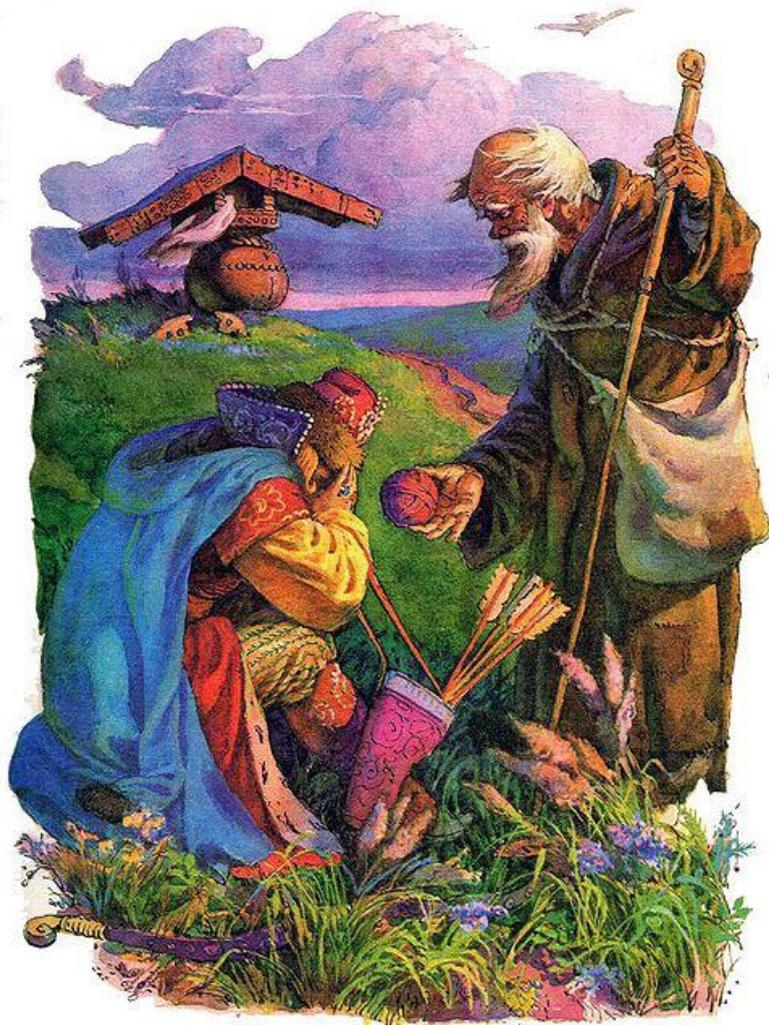
"शुभ दिन नौजवान!" बूढ़े ने कहा. "तुम क्या खोज रहे हो और कहाँ जा रहे हो?"

त्सारेविच इवान ने उसे अपनी परेशानी के बारे में बताया, और छोटा बूढ़ा आदमी बोला:

"आह, त्सारेविच इवान, तुमने मेंढकी की खाल क्यों जला दी? वो खाल तुम्हारे पहनने और उतारने के लिए नहीं थी. वासिलिसा बुद्धिमान और चतुर अपने पिता की तुलना में अधिक बुद्धिमान और चतुर पैदा हुई थी, और उससे उसका पिता इतना क्रोधित हुआ कि उसने उसे तीन साल के लिए एक मेंढकी में बदल दिया. आह, ठीक है, अब उसकी कोई मदद नहीं कर सकता है. अच्छा, तुम्हारे लिए यह धागे की एक गेंद है. वो जहाँ भी लुढ़ककर जाए तुम बिना किसी डर के उसका पीछा करना."

त्सारेविच इवान ने उस छोटे बूढ़े आदमी को धन्यवाद दिया जो जितना बूढ़ा हो सकता था उतना ही बूढ़ा था, वह धागे की गेंद के पीछे-पीछे गया, और जहां भी गेंद लुढ़की उसने उसका पीछा किया. एक खुले मैदान में उसकी मुलाकात एक भालू से हुई. उसने निशाना साधा और वो भालू को मारने ही वाला था, लेकिन भालू ने मानवीय आवाज में कहा:

"मुझे मत मारो, त्सारेविच इवान, कौन जानता है, लेकिन किसी दिन तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़ सकती है."

त्सारेविच इवान को भालू पर दया आ गई, उसने उसे जाने दिया और खुद आगे बढ़ गया. धीरे-धीरे उसने देखा, और लो! ऊपर एक बत्तख उड़ रही थी. त्सारेविच इवान ने निशाना साधा, लेकिन बत्तख ने मानवीय आवाज़ में उससे कहा:

"मुझे मत मारो, त्सारेविच इवान, क्या पता किसी दिन तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़ सकती है!"

और त्सारेविच इवान ने बत्तख को बख्शा और आगे बढ़ गया. तभी एक खरगोश दौड़ता हुआ आया. त्सारेविच इवान ने तेजी से निशाना साधा और वो उसे गोली मारने ही वाला था, लेकिन खरगोश ने मानवीय आवाज़ में कहा:

"मुझे मत मारो, त्सारेविच इवान, कौन जानता है, लेकिन किसी दिन तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़ सकती है!"

और त्सारेविच इवान ने खरगोश को बख्श दिया और वो आगे चला गया.

वह नीले समुद्र के पास आया और उसने रेतीले तट पर एक पाईक मछली को लेटे हुए और हांफते हुए देखा.

"मुझ पर दया करो, त्सारेविच इवान," पाइक मछली ने कहा. "मुझे वापस नीले समुद्र में फेंक दो!"

इसलिए त्सारेविच इवान ने पाइक को समुद्र में फेंक दिया और किनारे पर चलने लगा. बहुत समय बीता या थोड़ा समय, कोई नहीं जानता, लेकिन धीरे-धीरे धागे की गेंद एक जंगल में लुढ़क गई. जंगल में मुर्गे के पैरों पर एक छोटी सी झोपड़ी खड़ी थी जो गोल-गोल घूम रही थी.

"छोटी झोपड़ी, छोटी झोपड़ी, वैसे ही खड़े रहो जैसे तुम पहले खड़ी थीं, अपना चेहरा मेरी ओर अपनी पीठ जंगल की ओर करो," त्सारेविच इवान ने कहा.

झोपड़ी ने अपना चेहरा उसकी ओर कर दिया और अपनी पीठ जंगल की ओर कर ली, और फिर त्सारेविच इवान ने झोपड़ी में प्रवेश किया, और वहां, स्टोव के किनारे पर, बाबा-यागा चुड़ैल लेटी थी, एक ऐसी मुद्रा में जो उसे सबसे अच्छी लगती थी, उसकी टेढ़ी नाक छत को दबा रही थी.

"तुम यहाँ क्यों आए हो, अच्छे युवा?" बाबा-यागा ने पूछा. "क्या तुम कुछ ढूंढने आए हैं? आओ, अच्छे युवा, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूं, कि तुम कुछ बोलो!"

त्सारेविच इवान ने कहा:

"पहले मुझे कुछ खाने-पीने को दो, बाबा-यागा, मुझे भाप में स्नान करने दो, और फिर बाद में तुम अपने प्रश्न पूछो."

इसलिए बाबा-यागा ने उसे स्नान कराया, उसे भोजन और पेय दिया और बिस्तर पर लिटा दिया, और फिर त्सारेविच इवान ने उसे बताया कि वह अपनी पत्नी बुद्धिमान और चतुर वासिलिसा की तलाश कर रहा था.
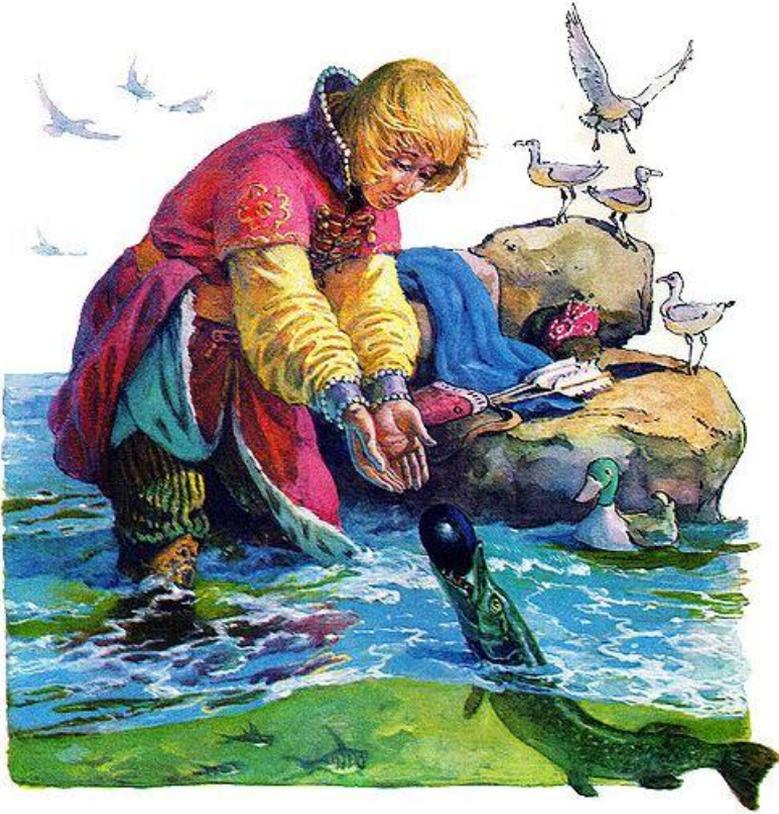
"मुझे पता है कि वह कहां है," बाबा-यागा ने कहा, "मृत्युहीन कोशी ने उसे अपने कब्ज़े में रखा है. उसे वापस पाना कठिन होगा, क्योंकि कोशी से भी कोई चीज़ हासिल करना आसान नहीं है. उसकी मृत्यु, एक सुई की नोक पर है, सुई एक अंडे में है, अंडा एक बत्तख में, बत्तख एक खरगोश में, खरगोश एक पत्थर के संदूक में, और संदूक एक ऊँचे ओक के पेड़ की चोटी पर है जिसकी रखवाली मृत्युहीन कोशी अपनी आँख की पुतली की तरह करता है."

त्सारेविच इवान ने बाबा-यगा की झोपड़ी में रात बिताई, और सुबह उसने उसे बताया कि उसे वो लंबा ओक का पेड़ उसे कहाँ मिलेगा. वह रास्ता लंबा था या करीब, यह कोई नहीं जानता, लेकिन धीरे-धीरे त्सारेविच इवान उस ऊँचे ओक के पेड़ के पास पहुँच गया. वह वहीं खड़ा रहा और सरसराता और हिलता रहा, और पत्थर का संदूक उस पेड़ के शीर्ष पर था और उस तक पहुंचना बहुत कठिन था.

अचानक, देखते ही देखते - भालू उसके पाद दौड़ता हुआ आया और उसने ओक का पेड़, जड़ें और सब कुछ उखाड़ दिया. सन्दूक नीचे गिर पड़ा और वह टूटकर खुल गया. एक खरगोश संदूक से बाहर निकला और जितनी तेजी से हो सकता था वो भागा. लेकिन एक अन्य खरगोश आया और उसने उस खरगोश का पीछा किया. उसने पहले खरगोश को पकड़ लिया और टुकड़े-टुकड़े कर दिए. खरगोश में से एक बत्तख निकली और वो आकाश में उड़ गई. लेकिन कुछ ही देर में एक अन्य बत्तख ने आकर उसे इतनी जोर से मारा कि उसने अंडा गिरा दिया और अंडा नीचे नीले समुद्र में जा गिरा.

इस पर त्सारेविच इवान फूट-फूट कर रोने लगा, क्योंकि वह समुद्र में उस अंडे को भला कैसे ढूंढ सकता था! लेकिन अचानक पाइक मछली अंडे को मुंह में लेकर तैरते हुए किनारे पर आई. त्सारेविच इवान ने अंडे को फोड़ दिया, सुई निकाली और वो उसकी नोक को तोड़ने की कोशिश करने लगा.

जितना अधिक वह उसे मोड़ता, उतना ही अधिक मृत्युहीन कोशी ऐंठता और मुड़ता गया. लेकिन अंत में त्सारेविच इवान ने, सुई की नोक तोड़ डाली, और फिर कोशी मृत होकर गिर पड़ा.

इसके बाद त्सारेविच इवान, कोशी के सफेद पत्थर के महल में गया. वासिलिसा बुद्धिमान और चतुर उसके पास दौड़ी हुई आई और उसने उसके शहद जैसे मीठे मुँह को चूमा. फिर त्सारेविच इवान और चतुर और बुद्धिमान वासिलिसा अपने घर वापस चले गए और लंबे समय तक और खुशी से एक साथ रहे जब तक कि वे काफी बूढ़े नहीं हो गए.